Toppersnotes®
Unleash the topper in you

3rd – ग्रेड

अध्यापक

लेवल – द्वितीय

कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

भाग – 2

राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत	1
2	राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग	12
3	राजस्थान का प्रारम्भिक इतिहास और राजपूतों की उत्पत्ति	23
4	मेवाड़ का इतिहास	27
5	राठौड़ राजवंश और मारवाड़ का इतिहास	43
6	गुर्जर प्रतिहार वंश व परमार वंश	55
7	चौहानों का इतिहास	58
8	आमेर का इतिहास (कच्छवाहा वंश)	72
9	जैसलमेर का भाटी वंश	82
10	करौली-भरतपुर का इतिहास	85
11	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	87
12	राजस्थान के मेले और त्योहार	106
13	राजस्थान के प्रसिद्ध लोक गीत	115
14	राजस्थान के लोक नाट्य	127
15	राजस्थान के लोक नृत्य	131
16	राजस्थान के प्रमुख रीति-रिवाज एवं प्रथाएँ	139
17	राजस्थान का साहित्य	145
18	राजस्थान के संत और लोक देवी - देवता	157
19	प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं व्यक्तित्व	172
20	राजस्थान के आभूषण एवं वेशभूषा	187
21	राजस्थान की चित्रकला	192
22	राजस्थान के हस्तशिल्प	203
23	राजस्थान और 1857 का विद्रोह	209

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	राजस्थान में जनजातीय आंदोलन	215
25	राजस्थान में किसान आंदोलन	219
26	प्रजामंडल आंदोलन	227
27	राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण	236
28	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	244

1 CHAPTER राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत

- **इतिहास के जनक** - यूनान के हेरोडोटस
  - इन्होंने 2500 वर्ष पूर्व **हिस्टोरिका** नामक **ग्रन्थ** की रचना की ।
  - **भारत** का **उल्लेख** भी किया ।
- **भारतीय इतिहास के जनक** - वेद व्यास
  - **महाभारत** की रचना की थी ।
  - महाभारत का **प्राचीन नाम** - जय संहिता
- **राजस्थान इतिहास के जनक** - कर्नल जेम्स टॉड ।
  - वर्ष 1818 से 1821 ई. के मध्य **मेवाड़** (उदयपुर) प्रांत के **पोलिटिकल एजेन्ट** थे ।
  - **घोड़े** पर **घूम**-घूम कर **राजस्थान इतिहास** को लिखा । अतः इन्हें **घोडे वाले बाबा** भी कहे जाते है।
  - **एनल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ़ राजस्थान/ सेन्ट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट ऑफ इंडिया** - लन्दन में वर्ष 1829 में प्रकाशन ।
  - गौरी शंकर हीराचन्द ओझा (जी. एच.ओझा) - **सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद** ।
  - **अन्य पुस्तक** - ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया
  - **मृत्यु पश्चात वर्ष** 1837 में पत्नी द्वारा **प्रकाशन** ।

पुरातात्विक स्रोत

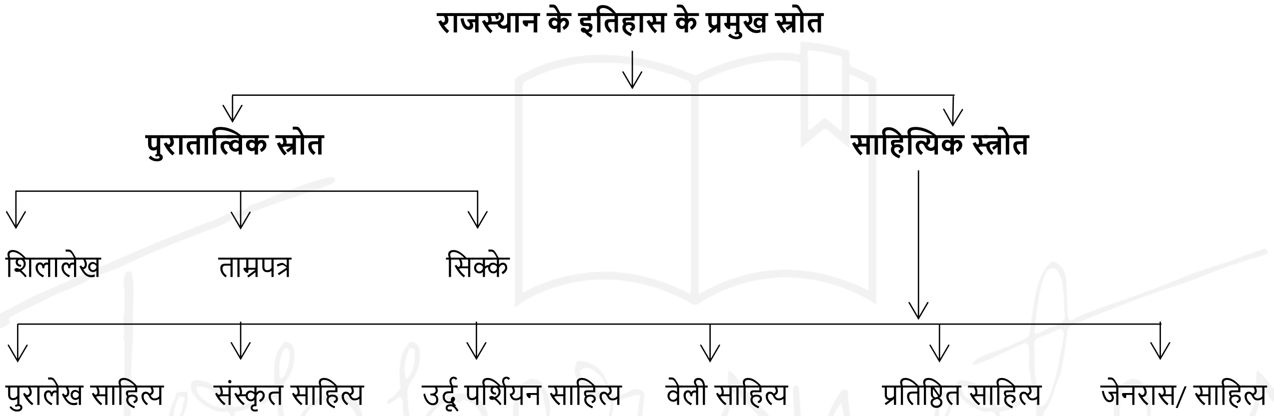

शिलालेख

रायसिंह प्रशस्ति (बीकानेर 1594 ई. में)	• प्रशास्तिकार- जैन मुनि जैता। • इसमें राव बीका से लेकर राव रायसिंह तक के बीकानेर के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन है । • इसके अनुसार बीकानेर दुर्ग का निर्माण 30 जनवरी, 1589 से 1594 ई. तक राव रायसिंह ने अपने मंत्री करमचंद द्वारा पूरा करवाया था।
मंडोर अभिलेख (837 ई में जोधपुर)	• यह गुर्जर नरेश बाउक की प्रशस्ति है। • इस में गुर्जर प्रतिहारों की वंशावली, विष्णु एवं शिव पूजा का उल्लेख किया गया है।

सच्चियाय माता की प्रशस्ति (1179 ई. ओसिया, जोधपुर)	• यह 1179 ई. का है। • सच्चियाय माता के मंदिर, में उत्कीर्ण किया गया है। • इसमें कल्हण को महाराजा एवं कीर्तिपाल को मांडव्यपुर का अधिपति बताया गया है।
बिजौलिया शिलालेख	• 1170 ई. में इसे बिजौलिया कस्बे के पार्श्वनाथ मन्दिर परिसर की एक बड़ी चट्टान पर संस्कृत में उत्कीर्ण किया गया। • इस अभिलेख की स्थापना जैन **श्रावक लोलक द्वारा** कराई गई थी तथा इसके लेखक **कायस्थ केशव** थे। • रचयिता- गुणभद्र। • इसमें सांभर व अजमेर चौहानों को **वत्सगोत्रीय ब्राह्मण बताते** हुए वंशावली दी गई है। • विग्रहराज चतुर्थ का दिल्ली पर अधिकार बताया है

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई. सिरोही)	• यह बसंतगढ़ (सिरोही) के क्षेमकरी (खिमेल) माता मंदिर से प्राप्त हुआ है। • वर्तमान में यह अजमेर के राजपूताना म्यूज़ियम में सुरक्षित है। • यह अर्बुद देश के राजा वर्मलात के सामंत रज्जिल तथा रज्जिल के पिता वज्रभट्ट (सत्याश्रय) का वर्णन करता है। • इस अभिलेख में राजस्थान शब्द का प्राचीनतम प्रयोग **'राजस्थानीयादित्य' के रूप में किया गया है।**
चिरवे का अभिलेख (1273 ई. \ वि.सं. 1330 उदयपुर)	• यह 1273 ई. का है। • **प्रशास्तिकार** – रत्नप्रभ सूरी • **इसके शिल्पी** – देल्हण • इस पर 36 पंक्तियों में 51 श्लोक देवनागरी लिपि और **संस्कृत भाषा** में लिखे गए है। • गुहिल वंशीय बप्पा के वंशधर पदम सिंह, जैत्र सिंह, तेज सिंह और समर सिंह की उपलब्धियो का उल्लेख • एकलिंगजी के अधिष्ठाता पाशुपत योगियों के अग्रणी शिवराशि का भी वर्णन किया गया है।
अपराजित का शिलालेख	• 661 ई. में उदयपुर जिले के नागदे गाँव के निकट कुंडेश्वर मंदिर की दीवार पर अंकित किया गया। • रचयिता - दामोदर था। • 7वीं सदी के मेवाड़ के इतिहास की जानकारी।
सामोली अभिलेख (उदयपुर)	• यह अभिलेख 646 ई. का है। • 5 पाँचवे राजा के समय का अभिलेख है, जो संस्कृत भाषा और कुटिल लिपि में लिखा गया है। • इसके अनुसार वटनगर (सिरोही) से आये हुए महाजन समुदाय के मुखिया जैतक महत्तर ने अरण्यवासिनी देवी (जावर माता का) मंदिर बनवाया था।
	• जैतक महत्तर ने 'बुक' नामक सिद्धस्थान पर अग्नि समाधि ले ली। • यह अभिलेख जावर के निकट अरण्यगिरी में ताँबे व जस्ते के खनन उद्योग की जानकारी देता है।
आमेर का लेख	• निर्माण - 1612 ई. में • इसमें कछवाहा वंश को **रघुवंशतिलक"'** कहकर संबोधित किया गया है। • इसमें पृथ्वीराज एवं उसके पुत्र भगवानदास और उसके पुत्र महाराजधिराज मानसिंह के नाम क्रम से दिए गए हैं।
भाब्रू शिलालेख	• यहाँ अशोक मौर्य के 2 शिलालेख मिले हैं आबू शिलालेख और बैराठ शिलालेख। • यह 1837 ई. में "बीजक की पहाड़ी से कैप्टन बर्ट द्वारा खोजा गया था। • वर्तमान में यह कलकता संग्रहालय में रखा है। • जिसकी वजह से इसे कलकत्ता-वैराठ लेख कहा जाता है। • इससे अशोक के बुद्ध धर्म का अनुयायी होना सिद्ध होता है। • इसे मौर्य सम्राट अशोक ने स्वयं उत्कीर्ण करवाया था।
घोसुण्डी शिलालेख (RAS Pre 2016)	• सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख | • द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व , घोसुण्डी, चित्तौडगढ़ से प्राप्त हुआ। • भाषा -संस्कृत, लिपि- ब्राह्मी | • सर्वप्रथम डी. आर. भंडारकर द्वारा पढ़ा गया। • **वैष्णव या भागवत** संप्रदाय से संबंधित। • कई शिलाखण्डों में टूटा हुआ। • एक बड़ा खण्ड उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित | • अश्वमेध यज्ञ करने और विष्णु मंदिर की चारदीवारी बनवाने का वर्णन है।

नगरी का शिलालेख	• काल 200-150 ई.पू. । • ब्राह्मी लिपि में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण किया गया है। • इसकी लिपि घोसुण्डी के लेख से मिलती है । • घोसुण्डी शिलालेख नगरी शिलालेख में जुड़वा अभिलेख| • राजस्थान वर्तमान में राजस्थान के उदयपुर संग्रहालय में स्थित ।
मानमोरी का शिलालेख (सन 713 ई.)	• मौर्य वंश से सम्बंधित यह लेख **चितौड़ के पास मानसरोवर** झील के तट से कर्नल टॉड को मिला था। • इसका प्रशस्तिकार **नागभट्ट का पुत्र पुष्य** है और उत्कीर्णक करुण का पौत्र **शिवादित्य** है। • चित्रांगद मौर्य का उल्लेख है जिसने चितौड़गढ़ का निर्माण करवाया । • अमृत मंथन की कथा का उल्लेख किया गया है। • कर्नल जेम्स टॉड ने इसे इंग्लैंड ले जाते समय असंतुलन की वजह से समुद्र में फेंक दिया था। इसमें भीम को अवन्तिपुर का राजा बताया है।
राज प्रशस्ति (1676 ई./वि.स. 1732)	• प्रशस्तिकार- रणछोड़ भट्ट तैलंग द्वारा। • महाराणा राजसिंह सिसोदिया के समय स्थापित करवाया गया था। • यह राजसमन्द झील की 9 चौकी की पाल पर 25 श्लोकों में उत्कीर्ण विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति है। • इसमें बापा रावल से लेकर राणा जगतसिंह द्वितीय तक की गुहिलों की वंशावली है। • इसमें महाराणा अमरसिंह द्वारा की गई **मुगल मेवाड संधि** का वर्णन है।
कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.)	• 1460 ई. के आसपास कुम्भलगढ़ में प्राप्त हुई। • प्रशस्तिकार उत्कीर्णक /- कवि महेश

	• राजस्थान के राजसमंद जिले के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भश्याम मंदिर में स्थित पाँच शिलाओं में उत्कीर्ण है। • इसमें प्रयुक्त **भाषा संस्कृत** और **लिपि देव नागरी** है। • इसमें गुहिल वंश और उनकी उपलब्धियों का वर्णन है। • इसमें बाप्पा रावल को **विप्रवंशीय** बताया गया है। • इसमें हम्मीर का चेलावाट जीतने का वर्णन है और **उसे विषमघाटी पंचानन** कहा गया है। • उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है । • इसमें मेवाड़ की तत्कालीन भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थति की जानकारी मिलती है ।
कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति(1460 ई.)	• **प्रशस्तिका**र- महेश भट्ट • **रचयिता**- अत्रि और महेश • यह राणा कुम्भा की प्रशस्ति है। • गुहिल वंश के बप्पा रावल से लेकर कुम्भा तक की विस्तृत जीवनी का वर्णन किया गया है। • इसमें कुम्भा को महाराजाधिराज, अभिनव भरताचार्य, हिन्दू सुरताण, रायरायन, राणो रासो छापगुरु, दानगुरु, राजगुरु, शैलगुरु आदि के नाग से वर्णित किया गया है। • इसमें मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं को कुम्भा द्वारा पराजित किये जाने का वर्णन किया गया है।
रणकपुर प्रशस्ति(1439ई. या वि.सं. 1496), पाली	• 1439 ई. में रणकपुर के चौमुखा मंदिर में उत्कीर्ण करवाया गया । • **प्रशस्तिकार** - दैपाक • मेवाड के राजवंश एवं भरणक सेठ के वंश का परिचय मिलता है। • कुम्भा की विजय का वर्णन मिलता है ।

	• बप्पा एवं कालभोज को अलग-अलग व्यक्ति बताया गया है। • गुहिलों को बाप्पा रावल के पुत्र बताया गया है।
जगन्नाथराय प्रशस्ति	• प्रशस्तिकार - कृष्णभट्ट • इसकी लिपि देवनागरी और भाषा संस्कृत है। • इसमें बाप्पा रावल से लेकर जगतसिंह सिसोदिया तक गुहिलों का वर्णन है। • यह उदयपुर के जगन्नाथ राय मंदिर में स्थित है। • प्रताप के समय लड़े गए हल्दीघाटी के युद्ध का वर्णन किया गया है।

	• प्रशस्ति के अनुसार महाराणा ने पिछोला के तालाब में मोहन मंदिर बनवाया और रूपसागर तालाब का निर्माण करवाया।
श्रृंगी ऋषि का शिलालेख (1428 ई. उदयपुर)	• इसे 1428 ई. में उत्कीर्ण करवाया गया। • यह लेख मोकल के समय का है। • मोकल द्वारा कुण्ड बनाने और उसके वंश का वर्णन किया गया है। • रचनाकार कविराज वाणी बिलारा योगेश्वर। • भाषा- संस्कृत

अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ

नाम	स्थान	काल	विवरण
बरली का शिलालेख	अजमेर (भिलोट माता के मन्दिर से)	दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व	• राजस्थान का प्राचीनतम शिलालेख • ब्राह्मी लिपि • वर्तमान में अजमेर संग्राहलय में सुरक्षित है।
नान्दसा यूप स्तम्भ लेख	भीलवाड़ा	225 ई.	• सोम द्वारा स्थापना
बड़वा यूप अभिलेख	कोटा (बडवा गाँव में)	238-39 वि.सं./ 181 ई. में	• भाषा संस्कृत एवं लिपि ब्राह्मी उत्तरी है। • मौखरी राजाओं का वर्णन मिलता है सबसे पुराना और पहला अभिलेख। • तीन यूप (स्तंभ)पर उत्कीर्ण है।
भ्रमरमाता का लेख	चित्तौड़	490 ई.	• गौर वंश और औलिकर वंश के शासकों का वर्णन मिलता है। • रचयिता - मित्रसोम का पुत्र ब्रह्मसोम • लेखक - पूर्वा
कणसवा अभिलेख	कोटा	738 ई.	• मौर्य वंशी राजा धवल का उल्लेख (शायद राजस्थान का अंतिम मौर्य शासक)।
ग्वालियर प्रशस्ति		880 ई.	• मिहिरभोज प्रथम की देंन • संस्कृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण • लेखक – भट्टधनिक का पुत्र बालादित्य • गुर्जर प्रतिहारों के वंशावलियों एवं उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है।
प्रतापगढ़ अभिलेख	प्रतापगढ़	946 ई.	• गुर्जर प्रतिहार नरेश महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन है।
अचलेश्वर प्रशस्ति	आबू		• इसमें पुरुष के अग्निकुंड से उत्पन्न होने का उल्लेख है। • परमारों का मूल पुरुष धूमराज होने का वर्णन है।
लूणवसही की प्रशस्ति	आबू-देलवाड़ा	1230 ई.	• भाषा - संस्कृत • इसमें आबू के परमार शासकों और वास्तुपाल तेजपाल के वंश का वर्णन है
नेमीनाथ की प्रशस्ति	आबू	1230 ई.	• रचयिता - सोमेश्वरदेव (शुभचन्द्र) • इसे सूत्रधार चण्डेश्वर ने खोदा था।
रसिया की छतरी का लेख	चित्तौड़गढ़	1331	• रचयिता - प्रियपटु के पुत्र नागर जाति के ब्राह्मण वेद

			शर्मा। • उत्कीर्णकर्ता - सूत्रधार सज्जन • इसमें गुहिल को बापा का पुत्र बताया गया है।
माचेड़ी की बावली का दूसरा शिलालेख	अलवर	1458 ई.	• इसमें अलवर में बड़ गुर्जर वंशी रजपालदेव राज्य पर अधिकार होने का वर्णन है ।
बरबथ का लेख	बयाना	1613-14 ई.	• इसमें अकबर की पत्नी मरियम उस -ज़मानी के द्वारा बरबथ में एक बाग़ और बावड़ी का निर्माण करने का उल्लेख बड़ है।
बर्नाला यूप स्तम्भ लेख	जयपुर	227 ई.	
चाटसू अभिलेख	जयपुर	813 ई.	• गुहिल वंशीय भरत्रभट्ट और उसके वंशजों का वर्णन है। • सूत्रधार – देइआ
बुचकला अभिलेख	जोधपुर(बिलाडा)	815 ई.	• वत्सराज के पुत्र नागभट्ट प्रतिहार का उल्लेख है ।
राजौरगढ़ अभिलेख	अलवर	960 ई.	• मथनदेव प्रतिहार
हर्ष अभिलेख	सीकर	973 ई.	• चौहानों के वंशक्रम का उल्लेख । • हर्षनाथ (सीकर) मंदिर का निर्माण अल्लट द्वारा करवाये जाने का उल्लेख । • वागड़ को वार्गट कहा गया।
रसिया की छतरी का शिलालेख	चित्तोड़गढ़	1274 ई.	• गुहिल वंशीय शासकों की जानकारी (बप्पा से नरवर्मा तक)। • रचनाकार- प्रियपटु के पुत्र वेद शर्मा
डूंगरपुर की प्रशस्ति	डूँगरपुर	1404 ईं	• उपरगाँव (डूँगरपुर) में में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण । • वागड़ के राजवंशों के इतिहास का वर्णन।

सिक्के

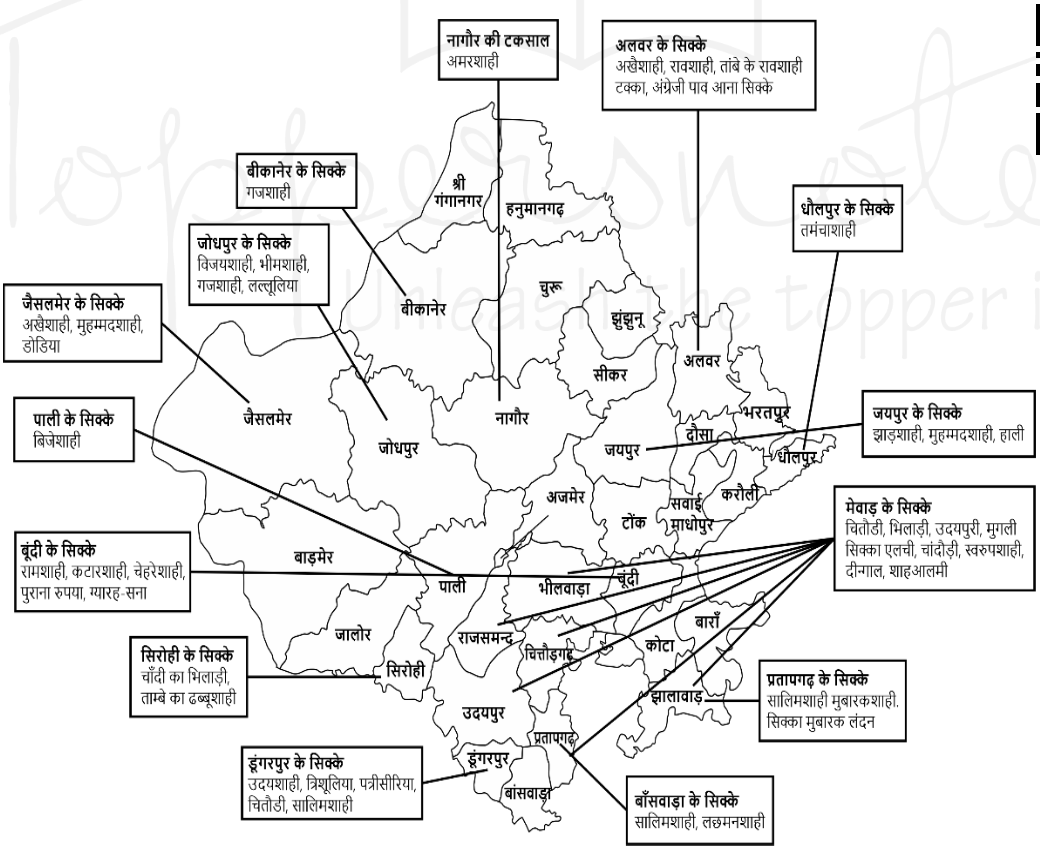

सिक्कों का अध्ययन - न्यूमिसमेटिक्स

- भारतीय इतिहास, सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक सभ्यता में सिक्को का व्यापार - **वस्तु विनियम पर आधारित।**
- **सर्वप्रथम सिक्कों का प्रचलन** - 2500 वर्ष पूर्व।
  - मुद्राएँ उत्खनन के दौरान **खण्डित अवस्था** में प्राप्त।
  - **विशेष चिन्ह** बने हुए हैं अतः इन्हें **आहत मुद्राएँ/ पंचमार्क सिक्के** भी कहते हैं।
  - वर्गाकार, आयाताकार व वृत्ताकार रूप में है।
- **कौटिल्य के अर्थशास्त्र** - सिक्कों को **पण/ कार्षापण की संज्ञा** - अधिकांशतः चाँदी धातु के।
- **सर्वप्रथम राजस्थान** के **चौहान वंश** ने मुद्राएँ जारी की।
  - **ताँबे के सिक्के -** द्रम्म और विशोपक
  - **चाँदी के सिक्के** - रूपक
  - **सोने के सिक्के** - दीनार
- मेवाड़ में प्रचलित सिक्के –
  - **ताँम्बे के सिक्के-** ढिंगला, भिलाडी. त्रिशुलिया, भिन्डीरिया, नाथद्वारिया।
  - **चाँदी के** सिक्के- द्रम्म , रूपक।
- अकबर ने राजस्थान में **सिक्का एलची** जारी किया। (चित्तोड़ विजय के बाद)।
  - **अकबर** के **आमेर** से **अच्छे संबंध** थे।
    - अतः वहाँ **सर्वप्रथम टकसाल** खोलने की अनुमति दी गई।
- **राजस्थान के प्राचीन सिक्के**
- अंग्रेजों के समय जारी **मुद्राओं में कलदार** (चाँदी) **सर्वाधिक प्रसिद्ध**

महत्वपूर्ण तथ्य

- तत्कालीन राजपूताना की रियासतों के सिक्कों के विषय पर केब ने 1893 ई.में "द करेंसी ऑफ द हिंदू स्टेट ऑफ राजपूताना" नामक पुस्तक लिखी।
- रैढ़ (टोंक) की खुदाई से 3075 चाँदी के पंचमार्क सिक्के मिले हैं जो भारत के प्राचीनतम सिक्के हैं और एक ही स्थान से मिले सिक्कों की सबसे बड़ी संख्या है।
  - इन सिक्कों को धरण या पण कहा जाता था।
- रंगमहल (हनुमानगढ़) से आहत मुद्रा एवं कुषाण कालीन मुद्राएँ मिली है।
  - कुषाण कालीन शिक्षकों को मुरण्ड़ा कहा गया है और यहाँ से प्रथम कुषाण कनिष्क का सिक्का भी मिला है।
- बैराठ सभ्यता (जयपुर) से भी अनेक मुद्राएँ मिली है जिनमें से 16 मुद्राएँ प्रसिद्ध यूनानी शासक मिनेण्डर की है।

*** RAS Pre 2018**

- इंड़ो - सासानी सिक्कों की भारतीयों ने गधिया नाम से पहचान की है जो चाँदी और ताम्र धातु के बने हुए होते थे।
- मेवाड़ के स्वरूपशाही और मारवाड़ के आलमशाही सिक्के ब्रिटिश प्रभाव वाले थे जिनमें "औरंग आराम हिंद एवं इंग्लिस्तान क्वीन विक्टोरिया" लिखा होता था।
- राजस्थान में सर्वप्रथम 1900 ई. में स्थानीय सिक्कों के स्थान पर कलदार का चालान जारी हुआ।

रियासत	सिक्के
बीकानेर	गजशाही सिक्के (चाँदी)।
जैसलमेर	मुहम्मदशाही, अखैशाही, डोडिया (ताँबा)
उदयपुर	स्वरूपशाही, चांदोडी, शाहआलमशाही, ढीन्गाल, त्रिशुलियाँ, भिलाडी, कर्षापण, भीड़रिया, पदमशाही।
डूँगरपुर	उदयशाही, त्रिशूलिया, पत्रिसीरिया, चित्तौडी, सालिमशाही सिक्का।
बाँसवाड़ा	सालिमशाही सिक्का , लक्ष्मणशाही
प्रतापगढ	सालिमशाही, मुबारकशाही, सिक्का मुबारक, लंदन सिक्का।
शाहपुरा	संदिया, मधेशाही, चित्तौडी, भिलाड़ी सिक्का
कोटा	गुमानशाही, हाली, मदनशाही सिक्के
झालावाड	पुराने और नए मदनशाही सिक्के
करौली	माणकशाही
धौलपुर	तमंचाशाही सिक्का
भरतपुर	शाहआलमा
अलवर	अखैशाही, रावशाही सिक्के, ताँबे के रावशाही सिक्का, अंग्रेजी पाव आना सिक्का।
जयपुर	झाड़शाही, मुहम्मदशाही, हाली।
जोधपुर	विजयशाही, भीमशाही, गदिया, गजशाही , लल्लूलिया रुपया।
सोजत	लल्लूलिया (पाली) एवं लाल्लुशाही सिक्के
सलूम्बर	पदमशाही (ताम्रमुद्रा)
किशनगढ़	शाहआलमी
बूँदी	रामशाही सिक्का ग्यारह- सना, कटारशाही, चेहरेशाही, पुराना रुपया।
नागौर की टकसाल	अमरशाही, कुचामनिया सिक्का (कुचामन टकसाल) इसे **इक्तिसंदा, बोपुशाही, बोरसी** भी कहते है।
पाली	बिजैशाही
सिरोही	चाँदी की भिलाड़ी, ताँबे का ढब्बूशाही
सलूम्बर	पदमशाही

ताम्रपत्र

राजस्थान के प्रमुख ताम्र पत्र

ताम्र पत्र	काल	के बारे में
धुलेव का दान पत्र	679 ई.	• किष्किंधा (कल्याणपुर) के महाराज भेटी ने अपने महामात्र आदि अधिकारियों को आज्ञा दी और उन्हें सूचित किया कि उन्होंने महाराज बप्पदत्ति के श्रेयार्थ और धर्मार्थ उबारक नामक गाँव को भट्टीनाग नामक ब्राह्मण को दान में दिया था।
ब्रोच गुर्जर ताम्रपात्र	978 ई.	• गुर्जर वंश के सप्तसैंधव भारत से लेकर गंगा कावेरी तक के अभियान का वर्णन। • इसके आधार पर कनिंघम ने राजपूतों को कुषाणों की यू-ए-ची जाति माना।
मथनदेव का ताम्र-पत्र	959 ई.	• मंदिर के लिए भूमि दान की व्यवस्था का उल्लेख है।
वीरपुर का दान पत्र	1185 ई.	• इसमें गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के सामंत वागड़ के गुहिल वंशीय राजा अमृतपालदेव के सूर्यपर्व पर भूमिदान देने का उल्लेख है।
आहड़ ताम्र-पत्र	1206 ई.	• गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव (द्वितीय) का है। • गुजरात के मूलराज से भीमदेव द्वितीय तक सोलंकी राजाओं की वंशावली दी गई है ।
पारसोली का ताम्र-पत्र	1473 ई.	• महाराणा रायमल के समय का है। • भूमि की किस्मों का उल्लेख – पीवल, गोरमो, माल, मगरा । ○ यह भूमि उस समय की सभी लागतों से मुक्त थीं।
खेरादा ताम्र-पत्र	1437 ई.	• महाराणा कुंभा के समय का है। • शंभू को 400 टके (मुद्रा) के दान का उल्लेख है। • एकलिंगजी में राणा कुंभा द्वारा किए गए प्रायश्चित, उस समय का दान, धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
चीकली ताम्र-पत्र	1483 ई.	• किसानों से एकत्र किए जाने वाले 'विविध लाग-बागों' को दर्शाता है। • पटेल, सुथार और ब्राह्मणों द्वारा खेती का वर्णन।
ढोल का ताम्र-पत्र	1574 ई.	• महाराणा प्रताप के समय का है जब उन्होंने ढोल नामक एक गाँव की सैन्य चौकी का प्रबंधन किया था और अपने प्रबंधक जोशी पुणो को ढोल में भूमि अनुदान दिया।
ठीकरा गाँव का ताम्र-पत्र	1464 ई.	• गाँव के लिए यहाँ 'मौंजा' शब्द का प्रयोग किया गया है।
पुर का ताम्र-पत्र	1535 ई.	• महाराणा श्री विक्रमादित्य के समय का है। • जौहर में प्रवेश करते समय हाड़ी रानी कर्मवती द्वारा दिए गए भूमि अनुदान के बारे में जानकारी । • जौहर प्रथा पर प्रकाश डालता है - चित्तौड़ के दूसरे साके का सटीक समय बताता है।
कोघाखेड़ी (मेवाड़) का ताम्रपत्र	1713 ई.	• कोघाखेड़ी गाँव का उल्लेख जिसे महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय ने दिनकर भट्ट को हिरण्याशवदान में दिया था।
गाँव पीपली (मेवाड़) का ताम्रपात्र	1576 ई.	• महाराणा प्रतापसिंह के समय का है। • स्पष्ट करता है कि हल्दीघाटी के युद्ध के बाद, महाराणा ने मध्य मेवाड़ के क्षेत्र में लोगों को बसाने का काम शुरू किया। • युद्ध के समय में जिन लोगों को नुकसान उठाना पड़ता था, उन्हें कभी-कभार मदद दी जाती थी।
कीटखेड़ी (प्रतापगढ़) का ताम्रपत्र	1650 ई.	• कीटखेड़ी गाँव के भट्ट विश्वनाथ को दान देने से संबंधित है। • राजमाता चौहान द्वारा निर्मित गोवर्धननाथजी के मंदिर की प्रतिष्ठा के समय दिया गया था।

डीगरोल गाँव का ताम्र-पत्र	1648 ई.	• महाराणा जगतसिंह के काल का है।
रंगीली ग्राम (मेवाड़) का ताम्रपत्र	1656 ई.	• महाराणा राजसिंह के समय का है। ○ उन्होंने गंधर्व मोहन को रंगीला नामक गाँव दिया ○ गाँव में खड़, लाकड और टका की लागत को हटा लिया गया ।
बेडवास गाँव का दान पत्र	1643 ई.	• समरसिंह (बाँसवाड़ा) के काल का है। • हल भूमि दान का उल्लेख है।
राजसिंह का ताम्रपत्र	1678 ई.	• महाराणा राज सिंह के समय का है।
पारणपुर दान पत्र	1676 ई.	• महाराजा श्री रावत प्रतापसिंह के काल का है। • उस समय के शासक वर्ग के नाम और धार्मिक उद्यापन की परंपरा का उल्लेख है। • टकी, लाग और रखवाली आदि करों का भी वर्णन है।
पाटन्या ग्राम का दान पत्र	1677 ई.	• महारावत प्रतापसिंह (प्रतापगढ़) द्वारा पाटन्या गाँव को महता जयदेव को दान देने का उल्लेख है। • आरंभिक पंक्तियों में गुहिल से लेकर भर्तृभट्ट तक के गुहिल राजाओं के नाम दिए गए हैं।
सखेडी का ताम्रपात्र	1716 ई.	• महारावत गोपाल सिंह के काल का है। • लागत-विलगत के साथ एक स्थानीय कर कथकावल का उल्लेख ।
बेंगू का ताम्रपत्र	1715 ई.	• महाराणा संग्राम सिंह के समय का है।
वरखेड़ी का ताम्रपत्र	1739 ई.	• महारावत गोपाल सिंह के समय का ○ कान्हा के बारे में उल्लेख है कि उन्हें लाख पसाव में वरखेदी गाँव और लखणा की लागत दी गई थी। ○ इसमें 'लाख पसाव' एक इनाम था और लखना की लागत बहुत मायने रखती है।
प्रतापगढ़ का ताम्रपात्र	1817 ई.	• महारावत सामंत सिंह के समय का है। • राज्य में लगे ब्राह्मणों पर 'टंकी' कर को हटाने का उल्लेख
ग्राम गड़बोड़ का ताम्रपात्र	1739 ई.	• महाराणा श्री संग्राम सिंह के समय का।
बाँसवाड़ा के दो दान पत्र	1747 और 1750 ई.	• महारावल पृथ्वी सिंह के समय का है।
बेडवास का ताम्र पत्र	1559 ई.	• उदयपुर बसाने के संवत् 1616 की पुष्टि पर प्रकाश डालता है।
लावा गाँव का ताम्रपत्र	1558 ई.	• महाराणा उदयसिंह ने ब्राह्मण भोला को आदेश दिया कि वह अब भविष्य की लड़कियों की शादी के अवसर पर 'मापा' कर नहीं लेंगे। ○ उस क्षेत्र की लड़कियों का विवाह कराने का उसका अधिकार पूर्ववत रहेगा।`
कुल-पुरोहित का दानपत्र	1459 ई.	इसमें शुभ अवसरों वाले "नेगों" का उल्लेख है।

पुरालेखागारीय स्त्रोत

राज्य अभिलेखागार बीकानेर में निम्नलिखित बहियाँ **संग्रहीत** है -

- **हकीकत बही**- राजा की दिनचर्या का उल्लेख
- **हुकूमत बही** - राजा के आदेशों की नकल
- **कमठाना बही** - भवन व दुर्ग निर्माण संबंधी जानकारी
- **खरीता बही** - पत्राचारों का वर्णन

साहित्यिक स्त्रोत

महत्वपूर्ण तथ्य

- **रास -** 11वीं शताब्दी के आसपास जैन कवियों द्वारा रचा गया ।
- **रासो** - रास के समानांतर राजाश्रय में रासो साहित्य लिखा गया जिसके द्वारा तत्कालीन, ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के मूल्यांकन की आधारभूत पृष्ठभूमि निर्मित हुई ।
  - यह राजस्थान की ही देन है ।
- **वेलि** - राजस्थानी वेलि साहित्य में यहाँ के शासकों एवं सामन्तों की वीरता, इतिहास, विद्वता, उदारता, प्रेम-भावना, स्वामिभक्ति, वंशावली आदि घटनाओं का उल्लेख होता है ।
- **ख्यात** - ख्यात का अर्थ होता है ख्याति अर्थात् यह

किसी राजा महाराजा की प्रशंसा में लिखा गया ग्रंथ ।
- ख्यात में अतिश्योक्ति में पूर्ण प्रशंसा की जाती है।
- राजस्थान के इतिहास मे 16 वीं शताब्दी के बाद के इतिहास में ख्यातों का महत्वपूर्ण स्थान है।
- यह वंशावली व प्रशस्ति लेखन का विस्तृत रुप होता है।
- ख्यात साहित्य गद्य में लिखा जाता है।

पृथ्वीराज रासो, चन्दबरदाई

- यह ग्रन्थ पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि चन्दबरदाई द्वारा पिंगल भाषा में लिखा गया जिसे उसके पुत्र जल्हण द्वारा पूरा किया गया।
- इसमें गुर्जर-प्रतिहार, परमार, सोलंकी/ चालुक्य, और चौहानों की गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि के आबू पर्वत के अग्निकुंड से उत्पत्ति का उल्लेख है।
- यह विशेषकर पृथ्वीराज चौहान के इतिहास पर प्रकाश डालता है ।
  - इसमें संयोगिता हरण और तराइन के युद्ध का वर्णन किया गया है।

प्रचलित विरोक्ति
चार बांस चौबीस गज अंगुल अष्ठ प्रमाण, ता ऊपर सुल्तान है मत चूके चौहाण

मुहणोत नैणसी री ख्यात

- यह मारवाड़ी और डिंगल में लिखा गया है।
- नैणसी (1610- 70 ई.) जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दरबारी कवि एवं दीवान थे।
- इसमें समस्त राजपूताने सहित जोधपुर के राठौड़ो का विस्तृत इतिहास लिखा गया है।

नैणसी को मुंशी देवी प्रसाद द्वारा "राजपूताने का अबुल फजल" कहा गया।

मारवाड़ रा परगना री विगत / गावां री ख्यात

- मुहणोत नैणसी द्वारा कृत है।
- बहुत बड़ी होने के कारण इसे "सर्वसंग्रह" भी कहा जाता है।
- इसमें उस समय की आर्थिक और सामाजिक आँकड़ो का वर्णन किया गया है और इसी वजह से इसे "राजस्थान का गजैटियर" भी कहा जाता है।

बांकीदास री ख्यात / जोधपुर राज्य री ख्यात

- लेखक - बांकीदास (जोधपुर के महाराजा मानसिंह राठौड़ के दरबारी कवि)।
- राठौड़ो और अन्य वंशों का विवरण है।
- मारवाड़ी और डिंगल भाषा में लिखी गई है।

दयालदास री ख्यात

- लेखक - दयालदास सिढायच (बीकानेर के महाराज रतनसिंह के दरबारी कवि)।
- इसे मारवाड़ी (डिंगल) भाषा में लिखा गया है।
- इसमें बीकानेर के राठौड़ो के प्रारंभ से लेकर महाराजा सरदारसिंह तक का इतिहास लिखा गया है (2 भाग)

मुण्डियार री **(RAS Pre 2013)**

- राव सीहा के द्वारा मारवाड में राठौड़ राज्य की स्थापना से लेकर महाराजा जसवंतसिंह प्रथम तक का वृत्तांत मिलता है।
- इस ख्यात में यह भी लिखा है कि अकबर के पुत्र सलीम की माँ जोधाबाई मोटाराजा उदयसिंह की दत्तक बहिन थी , जिनकी माता मालदेव की दासी थी।

कवि राजा री ख्यात

- इस ख्यात में जोधपुर के नरेश महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के शासन काल के बारे मे विस्तारपूर्वक बताया गया है।
- इसके अतिरिक्त राव जोधा, रायमल, सूरसिंह के मंत्री भाटी गोबिन्ददास के उपाख्यान भी शामिल है।

किशनगढ़ री ख्यात

- किशनगढ़ के राठौड़ों का इतिहास

भाटियों री ख्यात

- जैसलमेर के भाटियों का इतिहास

राजस्थानी साहित्य	साहित्यकार
पृथ्वीराजरासो	चन्दबरदाई
बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
हम्मीर रासो	शारंगधर
संगत रासो	गिरधर आंसिया
वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
पाथल और पीथल	कन्हैया लाल सेठिया
धरती धोरा री	कन्हैया लाल सेठिया
लीलटांस	कन्हैया लाल सेठिया
रूठीराणी, चेतावणी रा चूंगठिया	केसरीसिंह बारहठ
राजस्थानी कहांवता	मुरलीधर व्यास
राजस्थानी शब्दकोश	सीताराम लीलास
नैणसी री ख्यात	मुहणौत नैणसी
मारवाड रा परगाना री विगत	मुहणौत नैणसी

राव रतन री वेलि (बूँदी के राजा रतनसिंह के बारे में)	कल्याण दास
कान्हड़दे प्रबंध	कवि पद्मनाभ (अलाउद्दीन के जालौर आक्रमण का वर्णन)
राव जैतसी रो छंद	बीठू सूजा
राजरूपक	वीरभान
सूरज प्रकाश	करणीदान (जोधपुर महाराजा अभयसिंह के दरबारी कवि)
वंश भास्कर	सूर्यमल्ल मिश्रण

संस्कृत साहित्य	साहित्यकार
पृथ्वीराज विजय	जयानक (कश्मीरी)
हम्मीर महाकाव्य	नयन चन्द्र सूरी
हम्मीर मदमर्दन	जयसिंह सूरी
कुवलयमाला	उद्योतन सूरी
वंश भास्कर /छंद मयूख	सूर्यमल्ल मिश्रण (बूँदी)
नृत्य रत्नकोष	राणा कुंभा
भाषा भूषण	जसवंत सिंह
एकलिंग महात्मय	कुम्भा

ललित विग्रहराज	कवि सोमदेव
राजवल्लभ	मण्डन (महाराणा कुम्भा के मुख्य कवि)
राजविनोद	भट्ट सदाशिव
कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्त्तकं काव्यम्	जयसोम
अमरसार	पंडित जीवधर
राजरत्नाकर	सदाशिव
अजितोदय	जगजीवन भट्ट (जोधपुर राजा अजीतसिंह के दरबारी कवि) ।

फारसी साहित्य	साहित्यकार
चचनामा	अली अहमद
मिम्ता-उल-फुतूह	अमीर खुसरो
खजाइन-उल-फुतूह	अमीर खुसरों
तुजुके बाबरी (तुर्की), बाबरनामा	बाबर
हुमायूँनामा	गुलबदन बेगम
अकबरनामा/आइने अकबरी	अबुल फजल
तुजुके जहाँगीरी	जहाँगीर
तारीख -ए-राजस्थान	कालीराम कायस्थ
वाकीया-ए-राजपूताना	मुंशी ज्वाला सहाय

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक युद्ध

वर्ष	युद्ध	के बीच हुआ	परिणाम
1191	तराइन का प्रथम युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	गौरी की हार हुई
1192	तराइन का द्वितीय युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	पृथ्वीराज की हार हुई
1301	रणथंभौर का युद्ध	हम्मीरदेव-अलाउद्दीन खिलजी	हम्मीर हार गया
1303	चित्तौड़ का युद्ध	राणा रतन सिंह-अलाउद्दीन खिलजी	राणा रतन सिंह हार गए
1311	सिवाना का युद्ध	सातलदेव चौहान-अलाउद्दीन खिलजी	साहलदेव हार गए
1527	खानवा का युद्ध	राणा सांगा - बाबर	राणा सांगा की हार हुई
1544	सुमेल का युद्ध (जैतारण)	मालदेव-शेरशाह सूरी	मालदेव की हार हुई
1576	हल्दीघाटी का युद्ध	महाराणा प्रताप-अकबर	महाराणा प्रताप हार गए
1582	दिवेर का युद्ध	महाराणा प्रताप, अमर सिंह - मुगल सेना	महाराणा विजयी
1644	मतीरे की राड़	अमरसिंह (नागौर)- कर्णसिंह	अमरसिंह विजयी
1803	लसवारी का युद्ध	दौलत राव सिंधिया-लॉर्ड लेक	सिंधिया की हार हुई

अन्य पुरावशेष

- वेदों में, **सरस्वती नदी** की **वाक्पटुता** और व्यापक रूप से **सराहना** की है।
  - **ऋग्वेद** - प्राचीन **राजस्थान** की "**जीवन रेखा**" ।
  - **मत्स्य** लोगों का भी **उल्लेख** ।
    - **शतपथ ब्राह्मण** - सरस्वती के तट के पास वाले लोग ।
- ब्राह्मण में **सलुवा लोगों** का उल्लेख **मत्स्यों** के साथ एक **जनपद** के रूप में जिन्होंने अपनी राजधानी **विराट** (जयपुर जिले में वर्तमान बैराठ या विराटनगर) में एक **व्यापक राज्य** विकसित किया।
  - **पांडवों** ने अपने **सहयोगी मत्स्यों** की मदद से विराट में अपने **निर्वासन** की **अवधि** बिताई।
- **महाभारत** - मत्स्य जनपद गौ धन में समृद्ध मत्स्य सत्य के लिए प्रसिद्ध था।
  - **मालवों** - महान योद्धाओं की एक जनजाति जिन्होंने कौरवों को पांडवों के खिलाफ उनकी लड़ाई में मदद की।
- **पुराणों** में राजस्थान के **पवित्र स्थान:**
  - **स्कंदपुराण** - भारतीय राज्यों की एक सूची देता है जिसमें राजस्थान के कुछ राज्य शामिल हैं - शाकम्भरी सपादलक्ष; मेवाड़ सपादलक्ष; तोमर सपादलक्ष: वागुरी (बेडेड); विराट (बैराट); और भद्र।
- **चीनी यात्री युआनच्वांग** - पो-ली-ये-ता-लो नामक स्थान का उल्लेख किया है जिसे विराट या बैराट (कोटपुतली -बहरोड़) के समकक्ष माना जाता है।
  - **उनके अनुसार**, "इस शहर के लोग बहादुर और साहसी थे और उनका राजा, जो फी-शी (वैश्य) जाति का था और युद्ध में अपने साहस और कौशल के लिए प्रसिद्ध था।"
- **700-1200 ई. का काल** - साहित्यिक गतिविधि अधिक।
- रचनाओं द्वारा राजस्थान की **राजनीतिक**, **सामाजिक**, **आर्थिक** और **धार्मिक स्थितियों** पर **प्रकाश**।

2 Chapter

राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग

राजस्थान के प्राक् और आद्य ऐतिहासिक काल को निम्न प्रकार से कालानुक्रम में विभाजित किया जाता है।

भूवैज्ञानिक अवधि	समय	संस्कृति/ उपकरण
प्लीस्टोसीन	500000 ई. पू.	**निम्न पुरापाषाण** – हैण्डएक्स, एलुशियन उपकरण
	50000 ई. पू. से 20000 ई. पू.	**मध्य पुरापाषाण** – स्क्रेपर, बोरर, फ्लेक्स
	20000 ई. पू. से 10000 ई. पू.	**उच्च पुरापाषाण** – ब्लेड, ब्यूरिन
होलोसीन	8000 ई. पू. से 2000 ई. पू.	**मध्यपाषाण** – माइक्रोलिथ्स, ब्लेड
	2500 ई. पू. से 1000 ई. पू.	**ताम्रपाषाणिक**, आहड़ संस्कृति, हड़प्पा संस्कृति, गणेश्वर, जोधपुरा
	1000 ई. पू. पश्चात	**प्रारम्भिक लौह युग**, जोधपुरा, नोह आदि

राजस्थान में पुरापाषाण युग (500000 ईसा पूर्व- 10000 ईसा पूर्व)

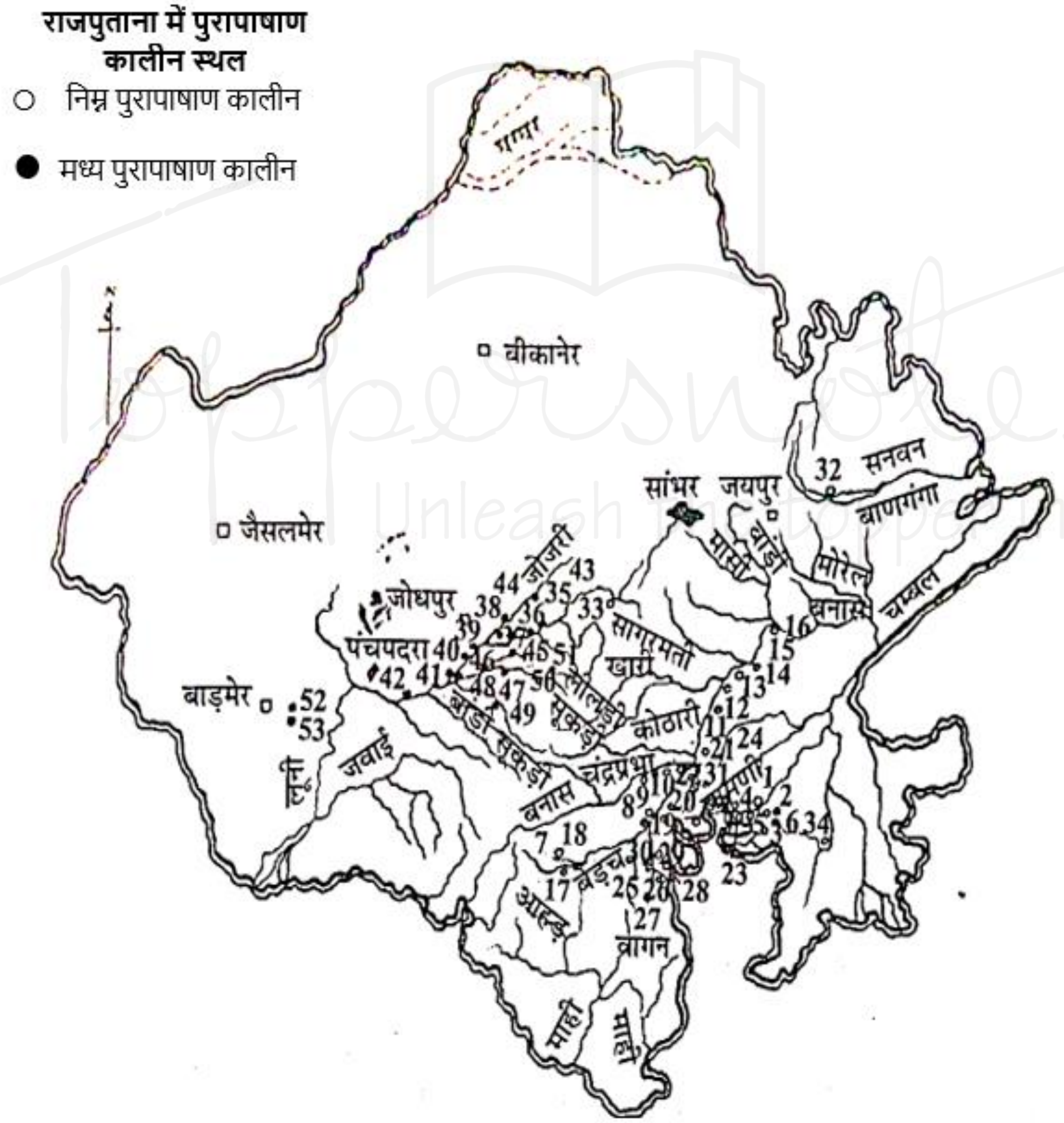

क्रमांकों की कुंजी	
1. भैंसरोड़गढ़	2. नवघाट
3. सोनिता	4. सिंगोली
5. हरिपुरा	6. बाडौली
7. नाथद्वारा	8. हम्मीरगढ़
9. स्वरूपगंज	10. मंडपिया
11. बीगोद	12. जहाजपुर
13. देओली	14. बनथाली
15. महुवा	16. टोंक
17. डबोक	18, खेड़ी
19. चित्तौड़गढ़	20. नगरी
21. संद	22. पारसोली
23. धगदामन	24. सामरिया
25. ब्यावर	26. कल्याणपुरा
27. खोर	28. मोरवण
29. रथजंना	30. सिगोह
31. ताजपुरा	32. भानगढ़
33. गोविंदगढ़	34. गजरौ
35. पिचाक	36. भावी
37. हुण्डगांव	38. गोलियो
39. श्रीकृष्णनपुरा	40. लूनी
41. धुंधारा	42. समदड़ी
43. पीपाड़	44. बिसालपुर
45. भेटान्दा	46. धनवासनी
47. बाण्डी	48. सिंणगारी
49. पाली	50. सोजत
51. धनेरी	52. बरका
53. जूना	

- इस काल में मानव पत्थर के औजारों का प्रयोग करता था और उसे धातु गलाने और उसे उपकरण निर्माण की कला का ज्ञान नही था ।
- पुरापाषाण युग 3 उपयुगों में विभाजित किया जाता है-

निम्न पुरापाषाण युग (5,00,000 ईसा पूर्व - 50,000 ईसा पूर्व)

- मुख्य रूप से अरावली के पूर्व में केन्द्रित है।
- **विशिष्ट पाषाण औजार** - हेंडएक्स, फ्लेक्स और क्लीवर।
- औजार बनाने के लिए कच्चा माल - क्वार्टजाइट, क्वार्ट्ज और बेसाल्ट ।
- राजस्थान में प्रारंभिक पाषाण युग के स्थलों की पहचान एचुलियन संस्कृति के रूप में
  - फ्रांसीसी साइट सेंट अचेउल के नाम पर रखा गया है।
  - भारतीय उपमहाद्वीप का पहला प्रभावी उपनिवेश ।
- ऐचुलियन संस्कृति - शिकारी संस्कृति।
- राजस्थान के निम्न पुरापाषाण स्थल - मंडपिया, बींगोद, देवली, नाथद्वारा, भैंसरोड़गढ़ और नावघाट।

महत्वपूर्ण तथ्य

- उत्तर-पूर्वी राजस्थान में प्रारम्भिक सर्वेक्षण कार्य जनरल अलेक्सेंडर कनिंगम द्वारा किया गया था। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रथम महानिदेशक भी रहे।

महत्वपूर्ण तथ्य

- भीलवाडा में बनास नदी के किनारे स्थित मंडपिया की खोज वी. एन. मिश्रा ने की थी ।

मध्य पुरापाषाण (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

- ऐचुलियन संस्कृति नए उपकरण और प्रौद्योगिकी विकसित करके धीरे-धीरे मध्य पुरापाषाण काल में परिवर्तित हो गई।
- **उपकरण** - साइड स्क्रेपर/ पार्श्व क्षुरणी, एंड स्क्रेपर/ छोर क्षुरणी, पॉइंट्स/ बेधनी, बोरर्स/ बेधक, फ्लेक्स/ शल्क आदि।
  - यहाँ चोपर - चौपिंग (खंडक-गंडासा) उपकरण अनुपस्थित है और हेंडएक्स और क्लीवर दुर्लभ होती हैं।
- **औजार** - छोटे, पतले और हल्के ।
- **कच्चा माल** - चर्ट, क्वार्ट्ज, एगेट, जैस्पर जैसी सिलिकामय शैल।
- राजस्थान में मध्य पुरापाषाण स्थल - लूनी घाटी, पाली और जोधपुर।
  - सोजत और पाली के दक्षिण में कोई निक्षेप नही पाया गया है।
- **अन्य स्थल** - मोगरा, नागरी, बारिधानी, समदड़ी, लूनी, धुंधाड़ा , श्रीकृष्णपुरा, गोलियो, हुंडगाँव, भावी, पिचाक आदि ।

उच्च पुरापाषाण काल (20,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व)

- औजार प्रारंभिक और मध्यकाल की तुलना में अधिक परिष्कृत थे।
- तकनीकों के शोधन और तैयार उपकरण रूपों के मानकीकरण के संबंध में चिह्नित क्षेत्रीय विविधता।
- उत्तर पुरापाषाण काल के औजार मुख्यत: फ्लेक्स और ब्लेड से बने थे ।
- महत्वपूर्ण खोज - राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में 40 से अधिक स्थलों पर शुतुरमुर्ग के अंडे के छिल्के मिले।
  - साक्ष्य हैं कि शुतुरमुर्ग, शुष्क जलवायु के अनुकूल एक पक्षी है।
- बस्तियाँ - जल के स्थायी स्रोतों के पास स्थित होने की एक विशिष्ट प्रवृत्ति।
- समाज छोटे समुदाय जिनमें आमतौर पर 100 से कम लोग होते थे, में विभाजित था ।
  - कुछ हद तक खानाबदोश थे जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे।
- मानव द्वारा कला का सबसे प्रारंभिक रूप शैलचित्र (भीमबेटका) के रूप में उत्तर पुरापाषाण काल का है।
- **राजस्थान में उच्च पुरापाषाण स्थल** - उत्तर पाषाणकालीन औजार एवं अवशेष मुख्यतः चम्बल, भैसरोड़गढ़, नवाघाट, बनास तट पर हमीरगढ़, जहाजपुर, देवली व गिलुण्ड, लूनी नदी के तट पर पाली, समदड़ी, शिकारपुर, सोजत, पीपाड़, खींवसर, बनास नदी के तट पर टोंक में भरनी आदि अनके स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

राजस्थान में मध्यपाषाण युग (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

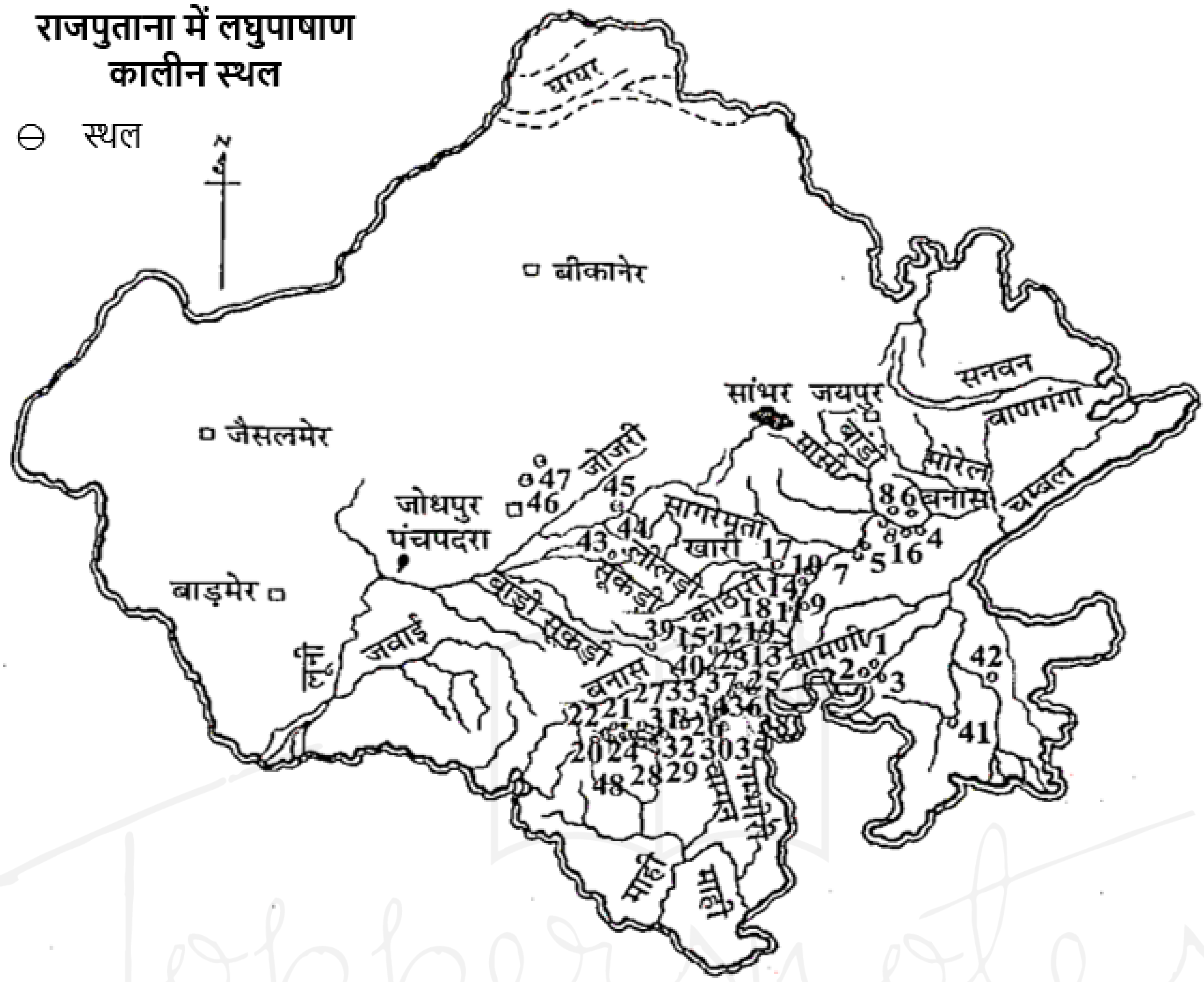

बागोर
- मध्यपाषाणकालीन स्थल
- भीलवाड़ा के निकट कोठारी नदी के किनारे स्थित |
- यह एक बड़े रेत के टीले के रूप में है जिसे महासती कहा जाता है।
- प्रथम उत्खनन 1967 में वी. एन. मिश्रा और डॉ. एल एस लेश्निक द्वारा ।
- इस स्थल से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं।
- उद्योग की दृष्टि से भारत का सबसे समृद्ध लघुपाषाणिक स्थल है।

- राजस्थान में इस युग का प्रारंभ लगभग 50000 वर्ष पूर्व होना माना जाता है।
- प्रारंभिक पाषाण काल की संस्कृति से कुछ अधिक विकसित किन्तु इस समय तक मानव को न तो पशुपालन का ज्ञान था और न ही खेती बाड़ी का।
- संस्कृति संगठित सामाजिक जीवन से अभी भी दूर थी।
- छोटे, हलके तथा कुशलतापूर्वक बनाये गए उपकरण प्राप्त।
- नुकीले तथा तीर अथवा भाले की नोक की तरह प्रयुक्त होते थे।
- राजस्थान के 2 क्षेत्रों में मध्य पाषाणकालीन स्थल विशेष रूप से खोजे गए हैं -
  - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (मेवाड़)
  - पश्चिमी राजस्थान में निचला लूनी बेसिन
- हालाँकि अधिकतम लघुपाषाणोपकरण उपयोग करने वाले मध्यपाषाण स्थल अरावली विभाजन के पूर्व में दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में खोजे गए हैं ।
  - उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बागौर
- **स्क्रेपर** –
  - 3 x 10 सेमी लम्बा आयताकार तथा गोल औजार ।
  - एक अथवा दोनों किनारों पर धार और एक किनारा पकड़ने के काम आता था।
- **पॉइंट**
  - त्रिभुजाकार स्क्रेपर के बराबर लम्बा तथा चौड़ा उपकरण हैं।
  - 'नोक' या 'अस्त्राग्र' के नाम से भी जाना जाता था।
  - प्राप्ति - चित्तौड़ की बेड़च नदी की घाटियों में, लूनी व उसकी सहायक नदियों की घाटियों में तथा विराटनगर से।

राजस्थान में नवपाषाण काल

- राजस्थान में मानव मध्यपाषाणकाल से सीधा उत्तर पाषाणकाल में प्रवेश कर गया था।
  - इसलिए राजस्थान में नवपाषाण काल की सभ्यता प्राप्त नहीं होती हैं।

नवपाषाण काल की विशेषताएँ

- मानव पशुपालन के साथ-साथ सर्वप्रथम कृषि कार्य करना शुरू कर चुका था।
- **राजस्थान में अवशेष -** बनास नदी के तट पर हम्मीरगढ़, जहाजपुर (भीलवाड़ा), लूनी नदी के तट पर समदड़ी (बाड़मेर) तथा भरणी (टोंक)।
- मानव पहिये से परिचित था और कपास की खेती भी करने लगा था।
- सामाजिक रूप से व्यवसाय के आधार पर जाति व्यवस्था का सूत्रपात।
- मृदभाण्ड कला का उदय तथा कुम्हार के चाक का उदय।
  - चमकदार मृद्भा**ण्ड**, धूसर म मृद्भा**ण्ड** तथा मंद वर्ण मृद्भा**ण्ड**।
- मनुष्य ने वस्त्र निर्माण, गृह निर्माण, पॉलिशिंग प्रणाली का कार्य प्रारंभ किया।
- अग्नि का प्रयोग होने लगा था तथा अग्नि की सहायता से भोजन पकाया जाने लगा।
- मानव का स्थिर ग्राम्य जीवन था।
- लोग पूर्णतः पत्थर से बने औजारों पर निर्भर थे।

ताम्रयुगीन सभ्यताए

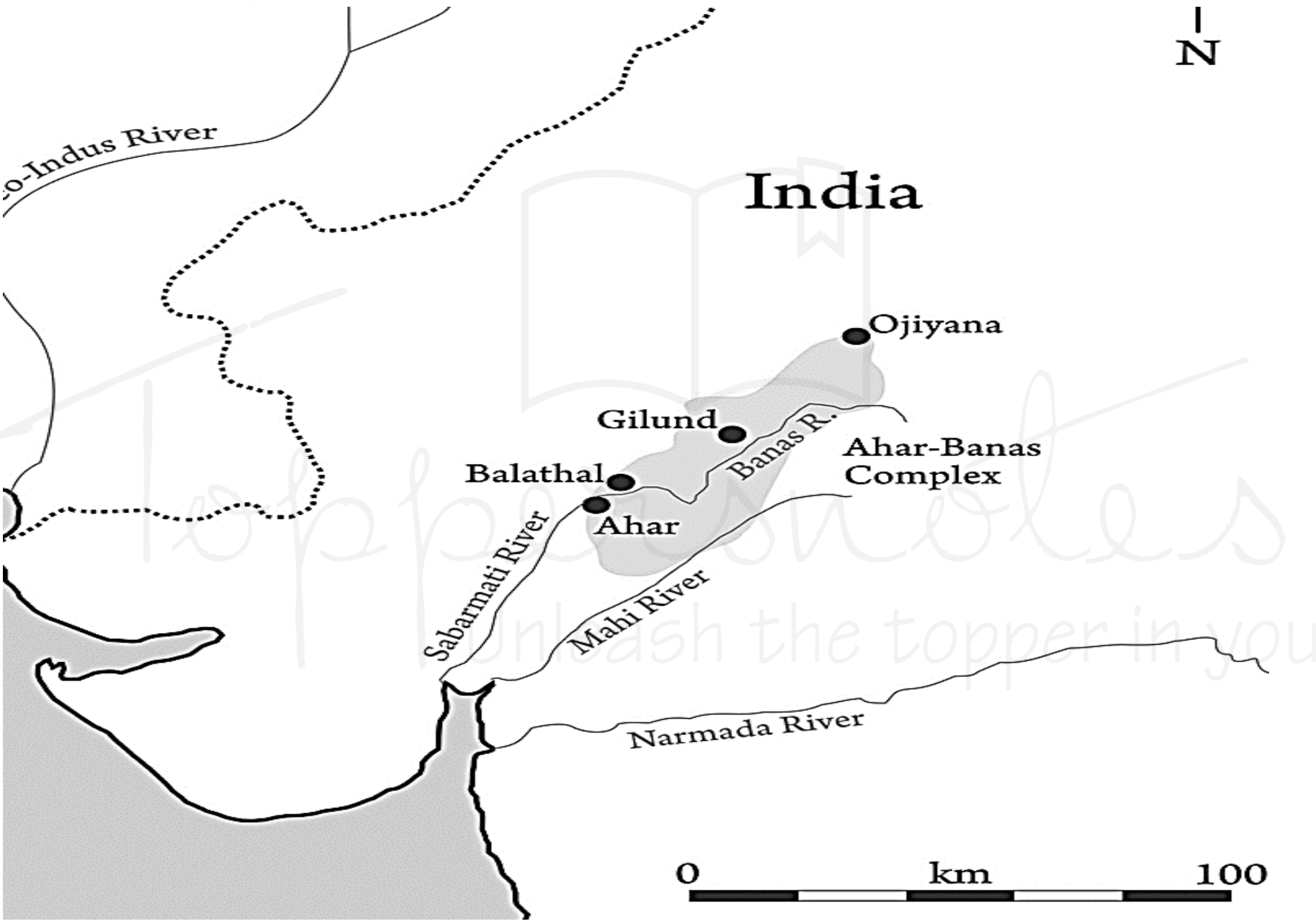

आहड़ सभ्यता (उदयपुर) **Ras Pre 2021/Ras Mains 2018**

- प्राचीन शिलालेखों में आहड़ का पुराना नाम "ताम्रवती" अंकित है।
- 10वीं और 11वीं शताब्दी में इसे "आघाटपुर/ आघाट दुर्ग" या "धूलकोट" या "ताम्रवती नगरी", "ताम्बावली" कहा जाता था।
- आयड/ बेड़च नदी के तट पर स्थित है।
- **अवधि** – 1900 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में
- **काल** – ताम्र पाषाण काल
- **प्रथम उत्खनन कार्य** – 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास की अध्यक्षता में।
- **अन्य उत्खननकर्ता** – 1953-1956 में आर. सी. अग्रवाल (रत्नचन्द्र अग्रवाल) तथा उसके बाद एच.डी.(हंसमुख धीरजलाल) सांकलिया
- इस संस्कृति में लघु पाषाण उपकरणों का सम्पूर्ण अभाव है।

विशेषताएँ

- **प्रमुख उद्योग** - ताँबा गलाना और उसके उपकरण बनाना
  - ताम्बे की खदाने निकट ही स्थित है।
  - ताँबा (धातु) गलाने की एक भट्टी भी प्राप्त
- निवासी **शवों** को उनके **आभूषणों के साथ दफनाते** थे।

- **माप तोल** के बाट प्राप्त
  - वाणिज्य के साक्ष्य
- लाल व काले मृद्भाण्ड का प्रयोग किया जाता था।
  - मृद्भाण्ड **उल्टी तिपाई विधि** से बनाये गए है।
- **बनास नदी सभ्यता** का एक **मुख्य हिस्सा**
  - इसलिए इसे **बनास संस्कृति** भी कहते हैं।

गोरे व कोठ

- आहड़ सभ्यता में पाए गए अनाज रखने के बड़े मृदभांड |

आहड़ में पाए जाने वाली मुद्राएं

- ताम्बे की 6 यूनानी मुद्राएं और 3 मुहरें • एक मुद्रा पर 1 त्रिशूल और दूसरी ओर अपोलो देवता अंकित है जिसके हाथ में तीर और तरकश है।

"बनासियन बुल"

- आहड़ से मिली टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ।

धर्मा संस्कृति

- राजसमन्द में गिलुण्ड से आहड़ की समान धर्मा संस्कृति मिली है ।
- अंतर आहड़ में पक्की ईटों का प्रयोग नही होता था जबकि गिलुण्ड में इनका प्रचुर उपयोग होता था।

प्राप्त वस्तुएँ

- मकानों की **नींवो** में **पत्थरों** का प्रयोग
- **ताँबा गलाने** की **भट्टियाँ**
- कपड़े की छपाई हेतु **लकडी** के बने **ठप्पे**
- ईरानी शैली के छोटे **हत्थेदार बर्तन**
- **हड्डी** का **चाकू**
- **सिर खुजलाने** का **यंत्र**
- मिट्टी का **तवा**
- **सुराही**
- एक मकान में **7 चूल्हे** एक पंक्ति में
- टेराकोटा निर्मित **2 स्त्री धड़**

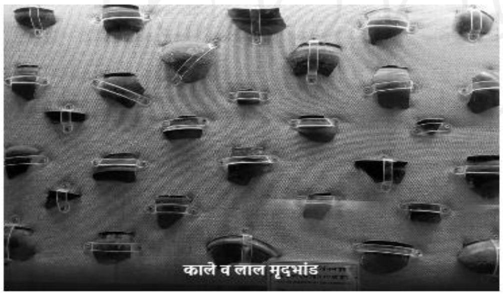

काले व लाल मृदभांड

महत्वपूर्ण स्थल

पछमता	• उत्खनन वर्ष 2015 • उदयपुर में स्थित है। • हड़प्पा के समकालीन है।
गिलुण्ड सभ्यता	• **राजसमंद** जिले में **बनास नदी** के तट पर स्थित। • **ग्रामीण** संस्कृति थी। • 1957-58 में प्रो.बी.बी. लाल ने गिलुण्ड पुरास्थल के 2 टीलों (स्थानीय रूप से मोडिया मगरी कहा जाता है) का उत्खनन किया। • **महत्वपूर्ण स्थल** - बनास व आहड़
	○ इसलिए इसे **ताम्रयुगीन सभ्यता** कहते है। • 100×80 आकार के **विशाल भवनों** के अवशेष । • 5 प्रकार के मृद्भांड प्राप्त: ○ सादे काले, पालिशदार, भूरे, लाल और काले चित्रित • यह ज्यामितीय अलंकरणों के साथ प्राकृतिक अलंकरण में भी उपलब्ध होते हैं। ○ आहड़ में केवल ज्यामितीय अलंकरणों का प्रयोग हुआ हैं।
बालाथल	• **उदयपुर** (राजस्थान) नगर से 42 किमी दक्षिण-पूर्व में वल्लभनगर तहसील में स्थित। • 3200 ई. पू. में अस्तित्व में आया। • **नदी** - बेडच • **खोजकर्ता -** 1962-63 में वी .एन .मिश्र द्वारा • लोगों ने **पत्थर** और **मिट्टी** की **ईंटों** के बड़े-बड़े मकान बनाये । ○ 11 कमरों के विशाल भवन के अवशेष। ○ अन्य ताम्रपाषाणयुगीन स्थलों पर केवल मिट्टी के छोटे मकानों के ही प्रमाण। • यहाँ से 4000 वर्ष पुराना एक कंकाल मिला है जिसे "**भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुरातन प्रमाण**" माना जाता है। • पूर्वी छोर पर लगभग **5 एकड़** क्षेत्र में फैला एक बड़ा **टीला** है। • **मृद्भाण्ड** ○ **2 प्रकार** के विशेष आकार प्रकार के **चमकदार** मृद्भाण्ड मिले हैं - एक खुरदरी दीवारों वाले तथा दूसरे चिकनी मिटटी की दीवारों वाले। ○ परिष्कृत मृद्भाण्डों में **प्यालियाँ** और **कटोरियाँ** शामिल हैं। • **परवर्ती हड़प्पायुगीन** लौह औजार **प्रधूर मात्रा** में पाये गये । ○ **लोहा गलाने** की **भट्टियाँ** भी प्राप्त हुई। • **योगी** मुद्रा में **शवाधान** किया जाता था। • लोग **कृषि**, **आखेट** तथा **पशुपालन** में लिप्त थे।
ओझियाना सभ्यता	• **भीलवाड़ा** के बदनोर के पास **कोठारी नदी** पर स्थित । ○ आहड़ या बनास संस्कृति का ताम्रपाषाणिक स्थल। • **सफेद बैल** की मृण मूर्तियाँ प्राप्त - **ओझियाना बुल**। • **कालखण्ड** - 2000 ईं. पू. से 1500 ईं. पू. के लगभग । • **उत्खनन** - 1999-2000 में वी आर. मीणा व आलोक त्रिपाठी के नेतृत्व में । • यह दूसरी नदी किनारे बसने वाली सभ्यताओं के विपरीत पहाड़ी पर स्थित है।